संस्कृत साहित्य सौरभ
कुंदमाला

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

२९

दिङ्नाग-कृत

कुंदमाला

श्री विनोद शर्मा
द्वारा
कथा-सार

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
सम्पादित

१९५७

सत्साहित्य-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स
दिल्ली

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो जिसके संबंध में मूल्यवान सामग्री का अनंत भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें; परंतु उसका रस वे हिन्दी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर संस्कृत के महाकवियों, नाटक-कारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

इस माला में कई पुस्तकें निकल चुकी हैं और आगे निकल रही हैं। आशा है, हिन्दी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रंथ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तक पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

—मंत्री

भूमिका

कुंदमाला के लेखक महाकवि दिङ्नाग के जीवन का इतिहास कहीं नहीं मिलता। इस नाटक के आधार पर ही उनके जीवन का अनुमान किया गया है। वे ७०० और ११०० ईस्वी के बीच कभी हुए थे। अधिकतर विद्वानों का मत है कि वे अनूपराध के निवासी थे। यह स्थान लंका में बताया जाता है। वह कट्टर पौराणिक ब्राह्मण थे और उन्हें संगीत से विशेष प्रेम था।

कुंदमाला में रामायण की प्रसिद्ध कथा मे से केवल सीता वनवास की घटना का वर्णन किया गया है। उसका आधार वाल्मीकि रामायण का उत्तरकांड और मुख्यतः भवभूति का उत्तर-रामचरितम् है। वैसे उत्तर-रामचरितम् और कुंदमाला की कथा में कई स्थानों पर अन्तर है। लेकिन समानताएं अधिक हैं। दिङ्नाग की शैली प्रसाद गुण से पूर्ण और सरल है। लम्बे-लम्बे समासों का उन्होंने कहीं प्रयोग नहीं किया। और न ही उन्होंने कृत्रिम शैली और भाषा का सहारा लिया है। उनकी उपमाएं बड़ी हृदय-ग्राहक हैं और उन्होंने अलंकारों का बड़ी कुशलता से प्रयोग किया है। उनकी भाषा परिष्कृत और रुचिर है। उनके सम्वाद आदि से अन्त तक छोटे, सरल, चुस्त और मुहावरेदार और चरित्र-चित्रण स्वाभाविक तथा सजीव हैं। यह नाटक करुण रस प्रधान है। यों शृंगार और वात्सल्य का सहारा भी लिया गया है। यह नाटक सरलता से सफलतापूर्वक अभिनीत किया जा सकता है।

—सम्पादक

कुंदमाला

रावण का वध कर चौदह साल के वनवास के बाद जब आर्य राम अयोध्या लौटे तो सारी नगरी हर्ष से भर उठी। घर-घर मंगलाचार होने लगा। जनता में नये जीवन का उदय हुआ। लेकिन अभी कुछ दिन ही बीते थे कि एक दुर्घटना होगई। आर्या सीता के चरित्र पर एक धोबी ने संदेह प्रकट किया। अनेक नागरिकों ने उसकी निंदा की किंतु वह अपनी बात पर अटल रहा। उसे बताया गया कि अग्नि में प्रवेश करने के बाद भी सीता जीवित निकल आई थी। क्या यह उसकी पवित्रता का प्रमाण नहीं है ? लेकिन धोबी नहीं माना। यह बात जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पास पहुंची तो वह बहुत व्याकुल हो उठे। सोच विचार करते रहे और अंत में लोक-निंदा के भय से उन्होंने अपनी परम प्रिय पत्नी का परित्याग करने का निश्चय कर लिया। अयोध्या में हाहाकार मच गया, किंतु राम का निश्चय अटल था।

लक्ष्मण ने बहुत विरोध किया; परन्तु अंत में

वह आर्या सीता को लेकर गंगा तट के बन प्रदेश में छोड़ने के लिए चल दिए। आर्या सीता अभी तक कुछ नहीं जानती थीं। बन की ओर जाते हुए उनका मन आनन्द से भर रहा था। बहुत दिनों के बाद वह फिर इस ओर आ रही थीं। लेकिन लक्ष्मण के मन में घोर संघर्ष मचा हुआ था। एक ओर बड़े भाई की आज्ञा का पालन और दूसरी ओर निर्दोष सीता को बन में अकेले छोड़ आने का कठोर कर्म। उनके मन में बारबार उठता था––मुझसा अधम कौन होगा जिसे एक निर्दोष सती नारी के निर्वासिन का कार्य करना पड़ रहा है।

गंगा का तट कुछ ही दूर था। उसकी लहरों का स्पर्श करते हुए मकरंद की सुगंध से सुरभित कलहंसों की ध्वनि से वायुमण्डल गूंज रहा था। दोनों रथ से उतरे। थकावट के कारण सीता ने कुछ देर विश्राम करने की इच्छा प्रकट की। लक्ष्मण अब भी निश्चय नहीं कर सके थे कि वह आर्य राम के निश्चय को उनसे कैसे कहें। लेकिन वह तो कहना ही था। साहस बटोरकर लक्ष्मण बोले, "आर्या, यह अभागा लक्ष्मण कुछ निवेदन करना चाहता है।" सीता ने उससे कहा, "क्या बात है, लक्ष्मण? इस तरह दुःखी क्यों हो रहे हो? आर्यपुत्र तो कुशल से हैं। क्या माता कैकेयी

ने फिर कोई इच्छा प्रगट की है ?"

यह सुनकर लक्ष्मण और भी व्याकुल हो उठे। दुःख के साथ बोले, "इस बार फिर बनवास की आज्ञा हुई है। लेकिन माता कैकेयी की ओर से नहीं, आर्य की ओर से आपको।"

सीता ठगी-सी देखती रह गई, "क्या कहते हो, आर्य ने मुझे बनवास दिया है !"

कांपते हुए लक्ष्मण बोले, "केवल आपको ही नहीं, उन्होंने अपने आपको भी बनवास दिया है। उन विशाल भवनों में दूसरे लोगों के रहते हुए भी आपके बिना आर्य बनवासी ही हैं।"

भगवती सीता यह सुनकर विलाप करने लगीं और मूर्छित हो गईं। दुःखी लक्ष्मण उन्हें होश में लाने का प्रयत्न करने लगा। कुछ देर बाद सीता को चेतना प्राप्त हुई तो उन्होंने इस बनवास का कारण पूछा।

लक्ष्मण ने सबकुछ कह सुनाया। सीता की पीड़ा और भी बढ़ गई। तब लक्ष्मण ने राम का एक और संदेश दोहराया, "देवी ! तुम मेरे हृदय में बसती हो। मेरा मन दूसरी स्त्री को ग्रहण करने की इच्छा कर ही नहीं सकता, इसलिए यज्ञ में तुम्हारी मूर्ति ही मेरी धर्मपत्नी होगी।" इस संदेश को सुनकर सीता के

टूटते हुए हृदय को कुछ सहारा मिला ।

सूर्य अस्त होने को था । पक्षी अपने नीड़ों की ओर लौट रहे थे । लक्ष्मण ने आर्या सीता को प्रणाम कर लौट जाने की आज्ञा मांगी । और संदेश भी मांगा । "माताओं के लिए चरण बन्दन । सखियों को प्यार और रघुवंश की राजधानी अयोध्या के लिए नमन ।" इतना कहकर सीता चुप हो गई । उनके होठ कांप रहे थे । आंखें गीली हो गई थीं ।

लक्ष्मण ने पूछा, "आर्य के लिए कोई संदेश नहीं, पूज्या ?"

किसी तरह अपने को संभाल कर सीता ने कहा "वे मुझ अभागन का शोक छोड़कर चारों वर्णों और आश्रमों की सेवा करें । अपने धर्म और शरीर की रक्षा करें । मुझ अभागन को उन्होंने बनवास तो दे दिया; किन्तु हृदय से निर्वासित न करें ।" यह कहते-कहते सीता का कंठ फिर अवरुद्ध हो आया । लक्ष्मण ने अंतिम बार प्रणाम किया और उनसे अपने अपराधों की क्षमा मांगते हुए योगपाल और दिक्पालों से निवेदन किया कि वे महाराज दशरथ की पुत्रवधू और राम की पत्नी की इस निर्जन वन में रक्षा करें । भागीरथी की ओर खड़े होकर उन्होंने प्रार्थना की, "भगवती,

कमल वन से आई पवन को अपनी लहरों से शीतल कर समय-समय पर आर्या सीता के दुखी मन को ढाढ़स बंधाना ।" फिर हिंसक पशुओं से बोले, "हे हिंसक प्राणियो, तुम इस वन को छोड़ दो। हे हरणियो, सखियों के अभाव में तुम सब आर्या के मन को बहलाना, उन्हें कभी अकेले नहीं छोड़ना ।"

इस तरह निवेदन और प्रार्थना का स्वर धीरे-धीरे दूर होता जा रहा था और पृथ्वी पर अंधकार उतर रहा था। भय से व्याकुल होकर सीता विलाप करती-करती मूर्च्छित हो गई। सारा वन उसकी पीड़ा से भर उठा।

उसी समय नित्य कर्म करने के लिए महर्षि बाल्मीकि गंगा की ओर आये । उनके कानों में किसी नारी का करुण स्वर पड़ा । उसीके सहारे वह मूर्च्छित सीता के पास आ पहुंचे। उनके मुख पर जल छिड़क कर उन्हें होश में लाने का प्रयत्न करने लगे। कुछ क्षण बाद सीता की चेतना लौटी और एक अपरिचित को सामने देखकर वह और भी घबरा उठी। किन्तु महर्षि की मधुर वाणी सुनकर उन्हें बड़ा धैर्य मिला, और उनके पूछने पर उन्होंने सब कथा कह सुनाई । अपने योगबल से सारी बातें जानकर

महर्षि मन ही मन हंसे। उन्होंने सीता को अपना परिचय दिया। वे महाराजा जनक के पुराने मित्र और महाराजा दशरथ के बालसखा थे। तब ससुर की तरह सीता ने उन्हें प्रणाम किया और उनके साथ आश्रम चली गई।

: २ :

ठीक समय पर आर्या सीता ने आर्य राम के समान, श्याम वर्ण वाले दो पुत्रों को जन्म दिया। आश्रम का कोना-कोना प्रसन्नता से झूम उठा। मुनि कन्याएं एक दूसरे को बधाई देने लगीं। भगवान वाल्मीकि ने बड़े पुत्र का नाम कुश और छोटे का लव रखा। वे धीरे-धीरे बड़े हुए और महाराज वाल्मीकि ने उन्हें अपनी बनाई हुई रामायण पढ़ाने का निश्चय किया।

एक दिन सखियां इसी बात को लेकर चर्चा कर रही थीं। एक मुनिकन्या ने नैमिशारण्य में यज्ञ की सामग्री एकत्र करने और तपस्वियों सहित निमंत्रण पाने की सूचना दी। दूसरी ने बात को पूरी करते हुए बताया कि महाराज राम ने भगवान वाल्मीकि को भी आमंत्रित किया है। उनका दूत महर्षि के तपोवन में आया था। चलो अब सीता को ढूंढ़ा जाय और यह समाचार उसे भी सुनाया जाय।

सब सखियां सीता को ढूंढ़ने चल दीं। आर्या सीता शाल वृक्ष की छाया में बैठी हुई थी। हृदय में एक ओर पति के वियोग का दारुण दुख था, तो दूसरी ओर महर्षि वाल्मीकि से पाये हुए आदर का गर्व और पुत्र लाभ का सुख भी था। इसी समय सखियों ने आकर लव-कुश का कुशल समाचार पूछा। सीता के हृदय की दशा जानने के लिए सखियों ने तरह-तरह से चेष्टाएं कीं। सीता का प्रत्येक शब्द आर्य राम के प्रति निष्ठा पैदा करनेवाला था। सखियां इस भावना से बहुत प्रसन्न हो रही थीं। कभी-कभी वे ऐसी बात भी कह देतीं जिससे सीता विचलित हो उठतीं। किन्तु फिर भी राम के चरणों में अनुराग की भावना उनके मुख पर चमक आती। कुछ देर इसी प्रकार परिहास करने के बाद सखियों ने सीता को यह शुभ समाचार सुनाया कि कुछ ही दिनों में इस आश्रम में आर्य राम के दर्शन होंगे। सीता चकित रह गईं। कहीं ये सखियां परिहास ही तो नहीं कर रही हैं। हृदय में अनेक प्रकार की कल्पनाएं उठने लगी। यह कैसे संभव है कि जिसने मुझे निर्वासित कर दिया है वे यहां इस आश्रम में आवें।

इसी समय किसी ऋषि का गम्भीर स्वर उन

सबके कानों में पड़ा:—आश्रमवासियो ! नैमिशारण्य में अश्वमेघ यज्ञ हो रहा है। अनेक देशों के आश्रमों से वशिष्ट, आत्रेय आदि महामुनि वहां इकट्ठे हुए हैं। केवल महर्षि वाल्मीकि के आने की प्रतीक्षा में महाराज राम ने यज्ञ की दीक्षा नहीं ली है। सब आश्रमवासियों से निवेदन है कि वे तीर्थों का जल, समिधाएं और कुशाओं के अंकुर लेकर आगे चलें। मुनि कन्याएं पर्णकुटियों के आंगन में मंगल बलियां दें।

आर्य काश्यप का स्वर सुनकर सीता कुश और लव के प्रस्थान का मंगलाचरण करने के लिए वहां से चल पड़ी।

: ३ :

नैमिशारण्य का वातावरण मुखरित हो रहा था। महाराज राम के अश्वमेध-यज्ञ में भाग लेने के लिए दूर-दूर से मुनि लोग आये हुए थे। इस समय सूर्य अस्त हो चुका था, पक्षी बसेरा ले रहे थे। आर्य राम लक्ष्मण के साथ महर्षि वाल्मीकि के दर्शन करने के लिए गोमती तट पर उनके आश्रम की ओर जा रहे थे। किन्तु सीता निर्वासन की बात हर क्षण उनके हृदय को साल रही थी। वे बहुत ही विचलित हो

रहे थे। इतने विचलित हो रहे थे कि आश्रम की ओर जानेवाले मार्ग को छोड़कर महावन की ओर चल पड़े। लक्ष्मण इस चिंता में थे कि उन्हें सही मार्ग बतलावें या इसी मार्ग से आश्रम की ओर जाने दें। जब उन्होंने आर्य राम को बहुत ही संतप्त देखा तो प्रकृति के सौन्दर्य की ओर उनका ध्यान दिलाने की चेष्टा की। वे चारों ओर फैले हुए प्रकृति के सौन्दर्य की प्रशंसा करने लगे। गोमती की लहरों को छूकर आनेवाली वायु ने आर्य राम को कुछ सान्त्वना अवश्य दी; किन्तु सीता का ध्यान उनके मन से एक पल को भी दूर नहीं हुआ। वे लक्ष्मण के साथ नदी के रेतीले पथ पर चले जा रहे थे। तट पर उगी हुई फूलों से रहित लताएं हवा के झोंके से कांप-कांप उठती थी। इस ओर से वृक्षों के पत्ते तोड़ लिये गए थे इसलिए छाया अधिक घनी नहीं थी। आगे चलते हुए लक्ष्मण ने कहा, "मैं समझता हूं मनुष्यों की बस्ती अब निकट ही होनी चाहिए। क्योंकि नदी के किनारे देवताओं को दिये गए जल और पुष्पों से युक्त हैं। और वह देखिए आर्य ! कुन्द पुष्पों से बनी हुई माला तरंगों के बीच सर्पिणी की तरह कैसी सुंदर चेष्टाएं कर रही है। पुष्पों के गूंथने का ढंग भी

कितना सुंदर है।'

पुष्पमाला की ओर एकटक देखते हुए आर्य राम बोले, "पुष्प गूंथने का यह ढंग मैं पहले भी देख चुका हूं।" यह कहते-कहते उन्हें रोमांच हो आया। लक्ष्मण ने सहज भाव से पूछा, "कहां देखा है ?"

पुलकित स्वर में राम बोले, "ऐसी निपुणता देवी सीता के सिवाय किसके हाथों में हो सकती है ?"

लक्ष्मण ने कहा--"आर्य, आओ गोमती के किनारे-किनारे चलते रहें। कुंदमाला के आगमन स्थान पर पहुंच ही जायंगे।"

राम बोले, "हमारा ऐसा भाग्य कहां। परित्यक्ता सीता के इस दूर देश में आने की संभावना नहीं हो सकती। फिर भी रास्ता दिखाओ।"

रेतीले तट से होते हुए दोनों भाई भगवान वाल्मीकि के आश्रम की ओर बढ़ने लगे। चारों ओर यज्ञ की धूम रेखाएं फैल रही थीं। साम मंत्रों की ध्वनि से सारा वायुमंडल गुंजित हो रहा था। सहसा एक जगह रुककर लक्ष्मण ने पृथ्वी पर एकटक देखना शुरू किया। आर्य राम ने पूछा, "वत्स ! इतने ध्यान से क्या देख रहे हो ?"

लक्ष्मण ने कहा, "अत्यंत सौन्दर्य के कारण

स्वभाव से धीरे-धीरे रेत पर रखे हुए ये चरण चिह्न किसी स्त्री के हो सकते हैं।"

राम ने भी इन चरण चिह्नों को देखा। बोल उठे, "अरे, यह तो सीता के चरण चिह्न हैं। देखो तो लक्ष्मण पैर के निचले भाग से बने हुए कमल का सुंदर अलंकार भी वही है। ये चरण चिह्न देखने पर शोक से व्याकुल मेरे मन को आकर्षित कर रहे हैं। लक्ष्मण इनके सहारे ही, इनके पीछे-पीछे चलते हुए हम आश्रम में पहुंच जायंगे। ये चिह्न ताजा ही हैं। इससे मालूम होता है कि देवी, समीप ही कहीं हैं।" यह कहकर दोनों भाई उसी ओर चल पड़े।

आर्या सीता भगवती भागीरथी में स्नान, संध्या-बंदन और अग्निहोम से निवृत होकर, अपने हाथों से गुंथी हुई कुंदमाला भागीरथी को अर्पित करने के पश्चात ऊंचे गहन तथा शीतल लता-कुंज में अतिथियों के सत्कार के लिए फूल चुन रही थी। तभी पद-चिह्न का अनुसरण करते हुए लक्ष्मण एक स्थान पर रुक गए। पानी से बाहर निकले हुए गीले तट को छोड़कर वे चिह्न आगे की सूखी भूमि में आकर छिप गए थे। स्थान बड़ा मनोरम था। लक्ष्मण ने कहा, "कुछ देर यहीं पर विश्राम किया जाय।"

ध्यान में खोये हुए राम बोले, "जैसी तुम्हारी इच्छा।"

फूल चुनती हुई सीता ने सहसा इस गंभीर स्वर को सुना और रोमांचित हो उठी। सोचने लगी– ये कौन हैं। क्या अपरिचित व्यक्ति को देखना उचित होगा ? लेकिन किसी अपरिचित व्यक्ति का स्वर तो मुझे रोमांचित नहीं कर सकता। यदि यह निर्मम आर्यपुत्र का ही स्वर है तो क्या उन्हें देख लूं। नहीं, मैं उन्हें नहीं देखूंगी, लेकिन मेरी दृष्टि तो उधर ही खिंची जा रही है। मैं अपने को रोक नहीं पा रही। तब क्या करूं। मुझे कुटुंबिनी-गृहणी का भार प्रेरित कर रहा है कि मैं उन्हें देख लूं।

उधर लक्ष्मण ने देखा– आर्य राम नीचा मुंह किये हुए संतप्त बैठे हैं। देवी सीता के साथ बिताये हुए जीवन के सुख-दुःख की अनेक घटनाओं की उन्हें याद हो आई है। इसी कारण वे दुःखी हैं। वे उन घटनाओं का वर्णन करने लगे और उन्हें सुनकर सीता और भी दुःखी होने लगी। लक्ष्मण ने राम को सान्त्वना दी। राम बोले, "क्या यह पता लगाया जा सकता है कि वह कहां है ?" और लक्ष्मण के मना करने पर राम यह कहकर रोने लगे, "मैंने रघुकुल

को नष्ट कर दिया।"

राम को रोते देखकर सीता के शोक की सीमा न रही, और साहस करके वे कुछ आगे बढ़ आईं और देखती ही रह गईं। एक क्षण तो उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं आया--हाय ! आर्यपुत्र की यह दशा। वे अपने को संभाल नहीं पा रही थी। किन्तु कोई उन्हें इस दशा में देख न ले, यह भय भी उन्हें सता रहा था। इसलिए कुश और लव की देखभाल करने के लिए वह लता समूहों की आड़ से राम की ओर देखती हुई आश्रम की ओर चली गई।

तभी एक ऋषि का गंभीर स्वर सुनाई दिया--महर्षि वाल्मीकि ने मुझसे कहा है, "वत्स वादरायण, मैंने सुना है कि आर्य राम लक्ष्मण के साथ इस तपोवन में आये हैं। शायद हमें नित्य कर्म में लगे जानकर बाहर ही कहीं रुक गए हैं। इसलिए तुम उनके पास जाकर कहो कि मैंने अनुष्ठान समाप्त कर लिया है और उनके दर्शन की अभिलाषा है।" सो मैं उनकी आज्ञानुसार राम को ढूंढ़ता हूं।

लक्ष्मण ने यह स्वर सुना और तपस्वी को अपनी ओर आते हुए देखा। तपस्वी ने भी उनको देख लिया और उनके समीप पहुंच कर महाराज वाल्मीकि की

इच्छा कह सुनाई। राम लक्ष्मण ने उन्हें प्रणाम किया और उनके साथ आश्रम की ओर चल पड़े।

: ४ :

तपस्विनी वेदवती ने आकर अपनी सखी यज्ञवेदि से कहा, "रामायण संगीत में भाग लेने के लिए जो अप्सरा तिलोत्तमा इस तपोवन में आई है वह दिव्य शक्ति से सीता का रूप धारण कर के राम के सामने जाना चाहती है। वह जानना चाहती है कि राम के हृदय में सीता के लिए पहले जैसा ही प्रेम है या नहीं। इसलिए तुम मुझे बताओ कि इस समय राम कहां हैं।"

इसपर यज्ञवेदि ने उत्तर दिया, "तिलोत्तमा जब तुमसे यह बात कह रही थी तब राम के मित्र आर्य हसित पास ही लताओं के घने प्रदेश में छिपे हुए थे, उन्होंने सब बातें सुन ली हैं।"

यह जानकर वेदवती को बहुत दुःख हुआ। वह समझ गई कि अब यदि तिलोत्तमा ऐसा करेगी तो उसका उपहास ही होगा। तभी यज्ञवेदि ने पूछा, "सीता इस समय कहां है ?"

वेदवती ने कहा, "इस समय सीता राम की दृष्टि से बचती हुई सारा दिन बावड़ी के तट पर बिताती है।

जिस समय राम यहां आये थे तब तपोवन की स्त्रियों ने भगवान वाल्मीकि से निवेदन किया था कि अब वे बावड़ी पर कमल तोड़ने और दूसरे कामों के लिए न जा सकेंगी, क्योंकि पर पुरुषों की दृष्टि उनपर पड़ेगी। इसपर भगवान वाल्मीकि ने कहा था, "बावड़ी पर आई हुई स्त्रियों को पुरुष न देख सकेंगे।"

यह कहकर वेदवती वहां से तिलोत्तमा के पास चली गई। यज्ञवेदि भी सीता की ओर चल पड़ी। देवी सीता बड़े आकर्षक ढंग से एक सफेद सुगंधमय दुपट्टा ओढ़े आर्यपुत्र के ध्यान में मग्न बैठी थी। विरह अवस्था में ऐसे वस्त्र धारण करने पर यज्ञवेदि ने आश्चर्य प्रगट किया। तब सीता ने कहा, "वनवास के समय जब चित्रकूट छोड़कर हम दक्षिण की ओर गए थे तब चिरकाल तक साथ रहने के कारण बनदेवी मायावती मेरी सखी बन गई थी। जाते समय उसने मुझे यह दुपट्टा भेंट किया था। यह चिरकाल से मेरे दुःखों का साथी है इसलिए मैं इसे आदरपूर्वक धारण किए हुए हूं।"

यह कहकर सीता रोने लगी। यज्ञवेदि ने उन्हें ढ़ाढ़स बंधाया। उसी समय उन्होंने देखा——मुनि लोग एकदम आसन छोड़कर परिजनों के कंधों पर वल्कल

रखे हुए प्रसन्नतापूर्वक एक ही ओर जा रहे हैं। यह देखकर यज्ञवेदि ने कहा, "मेरा अनुमान है कि महाराज राम आ गए हैं।" यह कहकर वह वहां से चली गई।

उसी समय महर्षि वाल्मीकि की आज्ञा से ऋषि कण्व आर्य राम को नैमिश वन की तपोभूमि की शोभा दिखा रहे थे। फूलों के भार से झुके हुए सहस्रों वृक्षों से निर्मित घेरे से श्यामल वन प्रदेश फल और फूलों की गंध से सुरभित हो रहा था। यज्ञ-होम की समिधा से उठा हुआ धुआं रेखाजाल बनाता-सा प्रतीत हो रहा था। निर्भीक हिरण इधर-उधर विचर रहे थे। मुनियों की मधुर साम-गान की ध्वनि सारे वायु-मंडल में गूंज रही थी। तब निरंतर आहुति डालने से बढ़ता हुआ धुआं आर्य राम की आंखों में भर गया। कण्व ने यह देखकर उन्हें बावड़ी के जल से नेत्र धोने और स्नान करने की सलाह दी और कुछ देर विश्राम करने का निवेदन किया। वे स्वयं कुलपति के यज्ञ में उपस्थित होने के लिए चले गए।

आर्य राम बावड़ी में उतरे ही थे कि उन्होंने जल में एक छाया को देखा। वह सीता की छाया थी। आश्चर्य से वे भर उठे। तो क्या सीता यहां है। यह सोच कर उन्होंने दोनों हाथ फैला कर उस छाया को

पकड़ना चाहा। पानी हिल उठा और छाया बिखर गई। राम उन्हें इधर-उधर ढूंढ़ने लगे। सीता तबतक वहां से दूर हट गई। उसे दुःख हुआ कि आर्यपुत्र मेरी छाया को देख रहे हैं। मुझे क्यों नहीं देखते। लेकिन तभी उन्हें मुनि के वरदान की बात याद आ गई। सोचने लगी – क्या ही अच्छा होता कि महर्षि छाया के भी न दिखाई देने का विधान कर देते। उधर राम सीता को न पाकर मूर्च्छित हो गए। सहसा सीता ने उनके पास जाने की चेष्टा की। लेकिन वे लौट आईं। उसके मन में बार-बार तर्क-वितर्क उठते रहे। लेकिन अंत में आर्यपुत्र के पास जाने की चाह ने ही विजय पाई। लोकपालों की आज्ञा लेकर वह उनके निकट पहुंच गई और उनकी मूर्च्छा दूर करने का प्रयत्न करने लगी। जल और आंचल के स्पर्श से आर्य राम की मूर्च्छा टूटी। सामने किसी को न देखकर उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया। वह अपने आप से कहने लगे–देवी के अतिरिक्त और कौन हो सकता है जो मेरे शरीर को आंचल से छू सके। यह कैसी माया है कि आंचल दिखाई दे रहा है; किन्तु उसको धारण करनेवाली नहीं।

आर्यपुत्र की यह दशा देखकर सीता पुलकित हो

उठी। वह समझ गई कि आर्यपुत्र के हृदय में उसके प्रति बहुत ही विशुद्ध प्रेम है। तब संध्या धीरे-धीरे पृथ्वी पर उतर रही थी और आर्यपुत्र को इस दशा में अकेला छोड़कर जाने का विचार सीता को व्यथित कर रहा था। तभी उसने देखा आर्यपुत्र का प्रिय सखा कौशिक उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से कुछ ढूंढ़ता हुआ इधर ही आ रहा है। यह देखकर वह वहां से चली गई। उनके जाने के बाद कौशिक ने महाराज को प्रणाम किया और राम ने अबतक का सारा वृत्तान्त उसे कह सुनाया। कौशिक को तुरन्त तिलोत्तमा वाली घटना याद हो आई और वह कहने लगा, "वह सब मायाजाल था। अप्सरा तिलोत्तमा सीता का रूप धारण करके आपकी परीक्षा लेने आई थी, तभी आप केवल आंचल को देख सके।" यह सुनकर राम को आश्चर्य के साथ दुःख भी हुआ। वे जिसे सत्य समझ रहे थे वह केवल मृग मरीचिका के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। रात फैलती जा रही थी, कमलों की कोमल पंखुड़ियां वियोग की अवधि गिननेवाली नारियों की तरह संकुचित होने लगी थीं। यह देखकर वे सब वहां से चले गए।

(५)

दूसरे दिन कौशिक ने आकर राम को सूचना दी कि तपस्वियों के एकत्र होने का समय आ गया है इस लिए आप चलिए। राम पूजा-उपासना से छुट्टी पा चुके थे, उसके साथ चल पड़े। जाते समय वे कल की घटना पर विचार कर रहे थे और उनका मन व्यथित हो रहा था। यह देखकर कौशिक उन्हें समझाने लगा। बातों ही बातों में उसने कहा कि वे वाणी मात्र से ही सीता को चाहते हैं, हृदय से नहीं। अन्यथा उनका परित्याग क्यों करते। इसपर राम ने कहा, "यह सब असत्य है। राम सीता के प्रति उदासीन नहीं है। ऊपर से यद्यपि मैं कठोर हूं; किन्तु मेरा हृदय कोमल है और सीता के प्रेम से भरा हुआ है।"

कौशिक स्वयं सीता के परित्याग से दुःखी था। वह तो केवल राम की परीक्षा लेना चाहता था। राम बोले, "सीता की कथा हम दोनों के लिए दुख देने वाली है। तपस्वियों के आने का समय हो गया है, इसलिए द्वारपालों से कहो कि द्वार पर दंड धारण करके खड़े हो जायं।

कौशिक चला गया और कुछ देर बाद लौटकर उसने कहा, "दो तपस्वी बालक अपनी संगीत-कला

का प्रदर्शन करना चाहते हैं। कामदेव के पुत्र के समान वे अति सुंदर हैं। बाल्य अवस्था के कारण वे कल्याण के अंकुर से प्रतीत होते हैं। अति चपल, शूर-वीर, धैर्यशील और विशाल हृदय वाले जान पड़ते हैं।"

यह सुनकर राम बोले, "हमारे सामने आने में उन्हें क्या अड़चन है ?"

कौशिक ने कहा, "वे महर्षि वाल्मीकि के शिष्य हैं। महर्षि ने उन्हें वीणा-वादन की कुशल शिक्षा दी है। वे महर्षि द्वारा रचित महापुरुष का चरित्रमय गायन सुनाना चाहते हैं।"

यह सुनकर आर्य राम के हृदय में उनको देखने का कौतुहल जागा और उन्होंने कौशिक से कहा– "शीघ्र ही उन बालकों को ले आओ।"

कुछ ही क्षण में वे दोनों बालक उनके सामने उपस्थित हो गए। उनको देखकर आर्य राम भाव विह्वल हो उठे। उनके नेत्रों में आंसू छलछला आये। सीता ने लव को आदेश दिया था कि वह राजा को प्रणाम करे और उनका कुशल-समाचार पूछे। स्वाभिमानी कुश ने पहले तो प्रणाम करने का विरोध किया लेकिन जब वे दोनों आर्य राम के सामने पहुंचे, ती चपलता और गर्व के स्थान पर उनके मन में श्रद्धा जाग उठी।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित कथा के नायक उनके सामने उपस्थिति थे, वे दोनों उनके सामने झुक गए। आर्य राम के आग्रह पर उन्होंने, कुशल-क्षेम पूछने के बाद, उनका आलिंगन किया। उन्हें रोमांच हो आया। एकाएक सीता की सुधि आ गई। सोचने लगे, यदि सीता ने भी सकुशल सन्तान को जन्म दिया होगा और बालक जीवित होंगे तो क्या अबतक वे इतने ही बड़े न हो गए होंगे।

और उन्होंने लव और कुश दोनों को अपने पास सिंहासन पर बिठा लिया। यह देखकर कौशिक चिल्ला उठा, "तपस्वी कुमारो, शीघ्र ही सिंहासन से उतर आओ, नहीं तो अनर्थ हो जायगा। मैंने साकेत के रहने वाले वृद्धजनों से सुना है कि रघुवंशी के अतिरिक्त जो भी इस सिंहासन पर बैठेगा उसके सिर के दो टुकड़े हो जायंगे।" दोनों बालक चौंककर सिंहासन से नीचे उतर आये लेकिन दोनों सकुशल थे। राज-सिंहासन पर बैठने के कारणं उन्हें कोई आघात नहीं पहुंचा था।

इसके पश्चात तपस्वियों के स्वस्तिवाचन मंत्रों से सदा सुरक्षित रहनेवाले इन बालकों के वंश का परिचय पाकर आर्य राम को अचरज के साथ-साथ आनंद भी हुआ। बालक सूर्यवंशी थे। यह बात

उनकी समझ में नहीं आई । वह बालकों से पूछ ही बैठे, मैं तुम्हारे जन्मदाता पिता के विषय में जानना चाहता हूं ।" लव ने उतर दिया, "उनका नाम अभी नहीं मालूम । तपोवन में कोई भी उनका नाम नहीं जानता ।" तभी कुश बोल उठा, "मैं जानता हूं ।" राम ने उत्सुकता से पूछा, "क्या नाम है उसका ।" कुश बोला, "निर्दय ।" राम को बड़ा आश्चर्य हुआ । कुश ने बताया, "हमारी मां उन्हें इसी नाम से पुकारती है । जब हम कोई चपलता करते हैं तो वह हमें झिड़कती है, "अरे निर्दय के पुत्रो, चपलता मत करो ।"

राम समझ गए । उनकी मां भी बेचारी किसी के द्वारा निर्वासित कर दी गई है । सोचने लगे—सीता के निर्वासन से लेकर आजतक का वृत्तान्त इनकी बातों से कितना मिलता हैं । . . .वह और भी व्याकुल हो उठे । तभी कौशिक ने पूछा, "क्या आप समझते हैं कि ये सीता के पुत्र हैं ।"

राम बोले, "मैं तपस्वियों के साथ ऐसा सम्बन्ध कैसे स्थापित्त कर सकता हूं । लेकिन ये दोनों बालक अपनी अवस्था, वंश, रूप और शरीर से मुझे सीता की याद दिलाकर अधीर कर रहे हैं ।"

उसी समय किसी ने लव और कुश को पुकारा,

कहा कि उन्हें महर्षि वाल्मीकि की लिखी हुई काव्य-कथा महाराज राम को सुनानी है, इससे दोपहर के स्नान आदि का समय न चूकना चाहिए। दोनों बालक तैयार थे। राम ने कौशिक से कहा, "मैं वह कथा मित्र-मण्डली में सुनना चाहता हूं। जाओ सभासदों को बुला लाओ और लक्ष्मण को भी मेरे पास भेज दो। तबतक मैं जरा टहलकर अपनी थकावट उतार लेता हूं।"

: ६ :

सभा-मंडप में तिल धरने को स्थान नहीं था। ऋषि मुनियों के अतिरिक्त पास से आयें हुए नागरिक भी भारी संख्या में उपस्थित थे। आर्य राम की आज्ञा से गायन आरंभ हुआ। दोनों बालक संगीत के साथ-साथ कथा कहने लगे। स्वर्गीय महाराज दशरथ और उनकी तीनों रानियों के विवाह की कथा से आरंभ करके जब वे राम के राज्याभिषेक के प्रश्न पर आये तो राम को आशंका हुई कि ये बालक कथा की सत्यता के लिए मझली मां कैकेयी की निन्दा करेंगे। बड़ों की निन्दा करना उचित नहीं हैं, इस मर्यादा पर ध्यान देते हुए आर्य राम ने बालकों से निवेदन किया कि वे बीच की कथा छोड़कर सीता-हरण से आगे

के प्रसंग को लें। बालकों ने सहजभाव से आर्य राम की आज्ञा को मान आगे की कथा सुनानी आरंभ करदी। कथा चलती रही और सीता वनवास के प्रसंग के बाद बालकों ने कहा, "कथा यहां समाप्त होती है। क्योंकि देवी सीता ने अवश्य ही आर्यपुत्र राम के वियोग में प्राण त्याग दिये होंगे अथवा गुरुदेव ने अप्रिय कथन के भय से इतनी ही कथा लिखी है।"

यह सुनकर आर्य राम और लक्ष्मण व्याकुल हो उठे। तब कुश ने अपने सहज कौतुहल से पूछा, "क्या राम और लक्ष्मण आप ही हैं ?"

लक्ष्मण का कण्ठ भर आया। बोले "हां, किन्तु बालको, क्या तुम्हें देवी सीता और उनकी सन्तान का वृत याद है।" कुश ने उत्तर दिया, "नहीं।"

तब आर्य के निवेदन पर ऋषि कण्व को बुलाया गया। और उन्होंने आगे की कथा बताई, "देवी सीता को वन प्रान्त से मुनिवर वाल्मीकि अपने आश्रम में ले आये। वहीं देवी ने सूर्य जैसी आभा वाले दो पुत्रों को जन्म दिया। समय आने पर जात-कर्म आदि सब संस्कार यथाविधि कराते हुए मुनिवर ने उन बालकों के नाम कुश और लव रखे।"

लक्ष्मण यह सुनकर प्रसन्नता से विभोर हो बोले,

"तात, आपको बहुत-बहुत बधाई।"

आर्य राम रोमांचित हो पूछने लगे, "क्या ये सीता के पुत्र हैं ? आओ पुत्र कुश, आओ पुत्र लव।" यह कहते हुए भाव विह्वल आर्य राम मूर्च्छित हो गए। आर्य राम की यह दशा देखकर लक्ष्मण की चेतना भी लुप्त होने लगी। लव-कुश भी इस आकस्मिक रहस्योद्घाटन से मूर्च्छित हो गए। अब तो ऋषि कण्व बहुत चिन्तित हुए और तुरन्त मुनिवर वाल्मीकि और देवी सीता को यह समाचार सुनाने के लिए आश्रम की ओर चले गए। महर्षि वाल्मीकि देवी सीता के साथ जब सभामण्डप में पहुंचे तब भी वे सब मूर्च्छित पड़े थे। अपने परिजनों की यह दशा देखकर देवी सीता विलाप करने लगी। महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें धीरज बंधाया और सबके मुख पर जल छिड़का। जल का स्पर्श पाकर कुछ क्षण बाद सबकी मूर्च्छा टूट गई। तब आर्य राम को उठते देख देवी सीता न जाने क्या सोचकर एक ओर हट गई। इतने दिन बाद एकाएक सामने आई हुई सीता को इस तरह एक ओर हटते देख आर्य राम को आश्चर्य के साथ पीड़ा भी हुई। वे कुछ कहें इससे पूर्व ही मुनिवर वाल्मीकि ने क्रुद्ध होकर उनसे सीता परित्याग के विषय में एक प्रश्न पूछा, "आर्य राम,

अग्नि देवता ने जिस सीता को निष्कलंक सिद्ध कर दिया था, उस सीता को केवल लोकनिन्दा के भय से तुमने परित्याग क्यों किया। तुमने सीता के प्रति अन्याय करने के साथ-साथ अग्नि देवता का भी अपमान किया।"

राम इस आकस्मिक प्रश्न से विकल हो उठे, किन्तु कुछ कह न सके। भविष्य में कभी कोई ऐसा प्रश्न न उठे केवल इसलिए महर्षि वाल्मीकि ने सीता को आज्ञा दी कि वह इस सभामण्डप में एक बार फिर खड़े होकर अपनी पवित्रता सिद्ध करदे। एक बार फिर वह यह कहे कि वह निष्पाप है, निष्कलंक है।

देवी सीता इस आज्ञा से कांप उठी। लेकिन ऋषि की आज्ञा का पालन तो करना ही था। लज्जापूर्वक बड़े कष्ट से बोली, "पूज्य लोकपालो, देवताओ, गंधर्वो, अपनी शक्ति से इस समस्त विश्व का रहस्य जाननेवाले महर्षि वाल्मीकि, विश्वामित्र, वशिष्ट आदि मुनिवरो और रघुकुल के प्रवर्त्तक भगवान सूर्य, आप सब सुनें– सीता शपथ लेकर कह रही है कि उसका आचरण शुद्ध है। मैं अपने कथन की सत्यता प्रतिपादन करने के लिए महा प्रभावशाली भगवती पृथ्वी से प्रार्थना करती हूं कि वह समस्त जगत के सामने प्रमाणित करें कि मेरा शरीर और मन पवित्र है।"

देवी सीता के हृदय से उठी इस पुकार से एक बार सारा भूमण्डल कांप उठा। क्षण भर के लिए सबकुछ स्तब्ध हो गया। फिर पाताल लोक से एक ज्योति-सी प्रगट होने लगी। कुछ ही क्षणों में भगवती पृथ्वी अपने पार्थिव शरीर को त्याग कर योग शक्ति द्वारा दिव्य देह धारण करके मृत्यु लोक की ओर चल पड़ीं। कमलों की गंध से दिशाएं सुरभित हो उठीं। महर्षि वाल्मीकि ने आदेश किया, "पृथ्वी देवी धीरे-धीरे प्रगट हो रही हैं। हे राजन्, हाथ जोड़ो। लक्ष्मण ! भक्ति-भाव से प्रणाम करो। कुश और लव अंजलि भर-भर कर पुष्प वर्षा करो।" सभी ने पृथ्वी को नमन किया। भगवती पृथ्वी का गंभीर स्वर सारे वायुमण्डल में गूंज उठा, "मैं सीता की चरित्र-शक्ति द्वारा ही प्रगट हुई हूं। सीता निष्कलंक है, निष्पाप है, शुद्ध है।" भगवती पृथ्वी के यह कहते ही आकाश से पुष्प-वर्षा होने लगी। चारों ओर हर्ष-नाद छा गया। महर्षि वाल्मीकि ने राम से कहा, "हे आर्य राम ! सीता की पवित्रता पर विश्वास कर अब तुम इसका सम्मान करो।" आर्य राम पुलकित हो रहे थे। लक्ष्मण ने पूज्या सीता को प्रणाम कर अपने अपराधों की क्षमा याचना की। देवी सीता फिर अपने परिजनों को

'संस्कृत-साहित्य-सौरभ' की पुस्तकें

१. कादंबरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुंतला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानंद
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार-चरित : भाग १
१५. दशकुमार-चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालतीमाधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमारसंभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावणवध
२८. सौंदरनंद
२९. कुंदमाला
३०. यशस्तिलक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

छः आना